विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता- ९/११/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ: -नवम: पाठनाम सूक्तय:

श्लोक २.

अवक्रता यथा चित्ते तथा वाचि भवेद् यदि ।

तदेबाहु: महात्मान: समत्वमिति तथ्यत:।।

शब्दार्था:

चित्ते – मन में , समत्वम् - समानता

वाचि – वाणी में तथ्यत: - वास्तव में

तदेवाहु: - उसे ही कहते हैं , चित्ते – मन में

अवक्रता - सरलता, यथा - जैसे

अर्थ

मन में जैसी सरलता हो, वैसी ही यदि वाणी में हो , तो उसे ही महात्मा लोग वास्तव में समानता कहते हैं ।